प्रभा खेतान के 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास में निरुपित स्त्री और समाज

प्रा.गांगुर्डे समाधन जयवंत
(हिन्ही विभगाध्यक्ष)
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, त्र्यंबकेश्वर, जि. नाशिक
gangurde784@gmail.com

प्राचीन कालसे भारतीय समाजमें स्त्री को शक्ती के रुप में स्वीकारा है यह परंपरा बहुत प्राचीन रही है हिंदी साहित्य में भी स्त्री के विविध रुपोंको साहित्य द्वारा उद्घाटीत किया है इन बातों पर आजतक बहुत गंभीर रुप से चिंतन हुआ है समाज में स्त्री कि वास्तविकता को साहित्य ने समय समय पर प्रस्तुत क्या है हिंदी साहित्य ने स्त्री एवं समाज के प्रती अपना दायित्व पुरी तरह निभाया है अनेक साहित्यकरोंने स्त्री और स्त्री को पुरुष से अलग करनेवाली सामजिक रूढीयों का विरोध करके अपने साहित्य के मध्यम से स्त्री को एक नये स्वतंत्र ,समानता की भूमिपर खडा करणे का प्रयास किया है आधुनिक स्त्री विमर्श ने स्त्री को स्व अस्तित्व के साथ अपने स्वतंत्र पहचान भी दी है वैश्वीकरण के इस युग ने स्त्री को नया और खुला आकाश प्रदान किया है पुरातन सामजिक परंपरा से दूर जाने का अब वह प्रयास कर रही है स्त्रीवादी साहित्य ने स्त्री के विभिन प्रश्नों ,समस्याओंको वास्तविकता के साथ पेश किया है वैश्वीकरण के इस युग में स्त्री पर होनेवाले अन्याय ,अत्यचार उसकी पीडा उनके विभिन प्रश्न केवल एक स्त्री के न रहकर समग्र स्त्री समाज के प्रश्न बनकर सामने आये है वही प्रश्न स्त्री विद्रोह के प्रमुख कारण बने है स्त्री के इसी विद्रोह ने प्रस्थापित व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाया है स्त्री साहित्य मूलतः पुरुष प्रधान संस्कृती के विरुद्ध का आक्रोश है अतः निश्चित रूप स्त्री विमर्श का साहित्य स्त्री की आंतरिक वेदना ,आक्रोश ,एवं विद्रोह का साहित्य है इस में स्वानुभूति होने के कारण इस साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है ,जिसमें स्त्री ने स्वयं की वेदना,पींडा और इनसे मुक्ती के साथ हि स्व कि नई पहचान का भी सफल प्रयास किया है सामजिक दृष्टी, अनेक सामजिक बंधनों के तथा अंधविश्वासों के बावजुद भी परिवर्तन के इस युग में स्त्री की बदलती हुई परिस्थिती में इस स्त्री विमर्श के साहित्यकारों महत्वपूर्ण योगदान रहेगा समाज को यह साहित्य निश्चित रूप से आत्मपरीक्षण के लिए विवश करेगा यही कारण रहा है कि, हिंदी साहित्य में अनेक महिला साहित्यकारोंने स्त्री की विभिन्न समस्याओं ,वेदनाओं ,प्रश्नों ,पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था की शिकार स्त्री और स्त्री के प्रती समाज के दृष्टीकोण को अपने साहित्य के मध्यम वाणी प्रदान करणे का सफल प्रयास किया है,जिसमें प्रमुख रूप से

चित्रा मुद्गल ,कृष्णासोबती ,मैत्रेयी पुष्पा ,कृष्ण अग्निहोत्री , ममता कालिया ,मृदूला गर्ग, मन्नू भंडारी ,नासिर शर्मा ,सुधा अरोडा आदी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है इन्हीं साहित्यकारों में से एक महत्वपूर्ण नाम डॉ. प्रभा खेतान का भी है

प्रभा खेतान इन्हीं साहित्यकारों में से एक प्रमुख साहित्यकार है उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री के विभिन प्रश्नों और समस्याओं पर प्रकाश डाला है प्रभा खेतान ने स्त्री की स्वतंत्रता, घुटन, वेदना, पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था द्वारा स्त्री पर हुआ अन्याय आदी पर प्रकाश डालकर समाज की इस प्रवृत्ति का विरोध किया है उनके साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता के साथ आर्थिक स्वावलंबी स्त्री , सयुक्त परिवार ,आधुनिक युगीन स्त्री विद्रोह आदि का चित्रण हुआ है पुरुषी व्यवस्थाने स्त्री को असहाय बना दिया है स्त्री को शक्ति मानना और प्रत्यक्ष स्त्री के साथ के व्यवहार मे अंतर है समाज की इसी भेद पूर्ण दृष्टी ने स्त्री के विकास को प्रभावित किया है मूलतः समाज का विकास स्त्री और पुरुष के समन्वय से हि साध्य है इनमें से एक भी प्रभावित होता है तो सारा समाज प्रभावित होता है प्रभा खेतान ने अपने साहित्य के माध्यमसे दर्शया है की स्त्री और पुरुष को समानता की राह पर चलना हि समाज के हित में है

'अपने अपने चेहरे' 1996 में प्रकाशित प्रभा खेतान की स्त्री निरुपण या विमर्श की महत्वपूर्ण औपन्याषिक रचना है हिंदी साहित्य में प्रभा खेतान की एक विशेष पहचान है उनके हर उपन्यास के पात्र समाज मे अपनी एक अलग छाप छोडते है उनकी रचनाओं में स्वअनुभूति को भी देखा जाता है अपने अपने चेहरे में लेखिका ने बदलते पारंपारिक समाज तथा मारवाडी समाज का चित्रण किया है इसमें चित्रित समाज एक ओर पुराणी अपनी सामाजिक परम्पाराओं को निभाना चाहता है,तो दुसरी ओर आधुनिकता को अपना ने की भी कोशिश करता है स्त्री जीवन के यथार्थ के साथ सदियोंसे वंचित शोषित स्त्री के प्रश्नों पर समाज का ध्यान केंद्रित किया है अपने अपने चेहरे में लेखिकाने अनेक स्त्री पात्रों के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत किया है ये सभी पात्र समाज को अंतर्मुख होकार विचार करने के लिए मजबूर कर देते है प्रभाजी ने परम्पराओं में बद्ध स्त्री, त्याग करनेवली स्त्री ,पुरुष प्रधान संस्कृती ,स्त्री विद्रोह ,स्त्री स्वतंत्र की आस, स्त्री का आर्थिक स्वावलंबन एवं पुरुषी स्वार्थवृती आदि को सफलता के साथ अपने अपने चेहरे में अनेक स्त्री पात्रों के माध्यम से निरुपित किया है, जिसमें प्रमुख रुप से रमा ,मिसेस गोयनका(सरला),मनोरमा ,रीतू ,प्रेमा ,स्मिता ,मृदुला ,आरती, डॉ.माधुरी मुखर्जी ,सपना दाई ,और जमुना जैसे अनेक पात्रों को सुंदर ढंग से निरुपित किया है

'रमा' अपने अपने चेहरे उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र है रमा उपन्यास की नायिका के रुप में चित्रित है रमा आधुनिक युग की आधुनिक विचारोंवाली पढी लिखी स्त्री है प्रमुख पुरुष पात्र मिस्टर गोयनका की प्रेमिका है गोयनका विवाहित पुरुष होकार भी रमा उससे प्यार करती है गोयनका और रमा में कारीबन अठारह वर्ष का अंतर है गोयनका के घर

टिचर के रूप में आयी रमा मिस्टर गोयनका की सेक्रेटरी बन जाती है बाद में मनेजर बनकर पुरा कारोबार खुद सम्भालती है चाहकर भी रमा अपने प्यार से बाहर नाहीं आ सकती और वह गोयनका परिवार का हिस्सा बन जाती है गोयनका के बच्चों को अपने बच्चों जैसा प्यार करती है,शिक्षा से लेकर बच्चों की शादी तक उनके विचारों से होती है, यहाँ तक की मिसेस गोयनका अपने बेटों पर भी रमा के अधिकार को मानती है अतः घर के हर काम में रमा का विचार महत्वपूर्ण मना जाता है उपन्यास में रमा एक त्यागी स्त्री के रूप मे भी चित्रित हुई है, यहाँ तक कि गोयनका परिवार की तरक्की में भी रमा का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है मिसेस गोयनका रमा को खुद अपने पती से शादी करने के लिए कहती है रमा एक पढी लिखी और स्वाभिमानी स्त्री है, अतः वह चाहकर भी मिस्टर गोयनकासे शादी नाहीं कर पाती, रमा के ना का कारण हमारा समाज है ,रमा अच्छी तरह से जानती है समाज उनके रिश्ते को कभी खुले मन से स्वीकार नाही करेगा स्त्री की ओर समाज आज इस युग में भी वही पुराणी दृष्टी से देखता है समाज की नजर में वह हमेशा मिस्टर गोयनका की दुसरी पत्नी हि रहेगी ,पेहले पत्नी का सम्मान उसे कभी नाही मिलेगा और रमा दुसरी स्त्री बनकर नाही रहेना चाहती दुसरी स्त्री यह शब्द भी रमा के लिए वेदना देता है प्रभा खेतान रमा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है , कि स्त्री कितभी पढी लिखी क्युं न हो समाज में आज भी वह अपनी मर्जी से नाही जी सकती समाज द्वारा अंकित चौखट में हि उन्हे रहेना पडता है रमा समाज के इन परंपरा के कारण ही अपने मन में घुट-घुट कर जिती है रमा की व्यथा केवल रमा की नाही , रमा को लेखिकाने समग्र स्त्री वर्ग के प्रतिक रूप में चित्रित किया है हमारे समाज पर आज भी पुराणे रिवाज और परंपरा की पकड बनी हुई है सब कुछ होकर भी समाज की नजर में रमा और मिस्टर गोयनका का प्यार शून्य है रमा का प्यार निस्वार्थ प्यार है ,उनका प्यार किसी भी प्रतिदान की इच्छा से रहित है मिस्टर गोयनक के घर का अभिन्न हिस्सा बनी रमा के सामने एक प्रश्न चिन्ह हमेशा उसे चिंतित करता है, क्या सचमुच वह इस घर का हिस्सा है ? इस चिंता से वह कभी भी बहार नाही आती समाज की मनोवृत्ती का परिचय देते हुये लेखिका बताना चाहती है कि ,पुरुष दुसरी स्त्री का साथ चाहता है पर समाज के विरुद्ध जाकर उन्हें सम्मान प्रदान नाही करता, वह उनका केवल उपयोग करता है - एक स्टेपनी की तरह रमा का यह मत पुरुष तथा समाज की प्रवृत्ति का परदाफाश करता है की बहु पत्नीत्व यह एक मानवीय कमजोरी है और प्यार हमेशा एक समान नाही होता ,वह घटता जाता है लेखिका यहा पर स्पष्ट भी करती है कि, स्त्री चाहे कितनी भी सक्षम हो ,पढी लिखी हो, खुद के पैरों खडी हो पर उन्हे एक पुरुष की आवशकता होती है ,अर्थात समाज का सही विकास स्त्री और पुरुष के समन्वय से हि है यही कारण है रमा गोयनका की बेटी को कहती है, अगर सुरक्षा चाहती हो तो पती के साथ रहों जिस गोयनका के साथ जीवन के पच्चीस साल बिना किसी स्वार्थ से रहकर भी उनकी मृत्यु के प्रसंग पर सारे मेहमान तथा परिचित कोई भी रमा को आगे दर्शन के लिए आगे नाही बुलाता

रमा स्वयं आगे जाती है और मिस्टर गोयनका की बेटी रीतू को भी आगे ले जाती है अन्त में पती का घर छोडकर मायके आयी रीतू को अपने साथ लेकर खुद के घर निकाल जाती है हमारी सामाजिक व्यवस्था स्त्री को हि हमेशा गुनाहगार ठहराती है प्रभा खेतान ने स्त्री व्यथा को अत्यंत मार्मिक ढंग से रमा के माध्यम से चित्रित किया है

'मिसेस गोयनका ' (सरला) अपने अपने चेहरे की दुसरा महत्वपूर्ण स्त्री पात्र है तथा मिस्टर गोयन की पत्नी है पती और पत्नी दोनों का स्वभाव बिल्कुल एक दुसरे के विरुद्ध है, अतः मिसेस गोयनका बेमेल विवाह की यह शिकार है शादी के पहले दिन सुहागरात के समय पती द्वारा बताया जाता की, उनके साथ शादी उनके पसंद विरुद्ध है लेखिका ने इनके माध्यमसे एक अजब व्यक्तित्व की स्त्री का परिचय दिया है अपने सहनशील स्वभाव के कारण तथा समाज से डरकर जिंदगी भर दुख सहती है लेखिकाने इनके माध्यसे अनपढ होकर भी एक समझदार स्त्री का परिचय दिया है एक भारतीय स्त्री की तरह वह भी किसी तरह अपने परिवार को बिखरने नाही देती ,घर में किसी प्रकार का विवाद उत्पन्न न हो इसलिए हमेशा प्रयत्नशिल रही है धार्मिक स्त्री होने के साथ हि साथ वह अत्यंत खुले स्वभाव की स्त्री है अपने पती की नापसंद होकार भी सभी रिश्तेदारों में वह प्रिय है इसी स्वभाव के कारण पती को और उनकी प्रेमिका रमा के रिश्ते को भी मान्यता देती है , इतनाही नाही बारबार पती को उनके साथ शादी के लिये कहती है रमा को सौतन के रूप मे स्वीकारने के लिए वह तैयार है लेखिका ने कुशलता के साथ इस ओर भी इशारा किया है कि, एक स्त्री हि स्त्री को समझ सकती है, तो दुसरी ओर वही मिसेसे गोयनका पती को तलाक भी नाही देती वह अच्छी तरह समाज को जानती है अतः उनका मानना है ,पती लाख चाहे पर समाज में उसकी पत्नी तो मुझे हि कहेंगे,सामजिक समारोह में मुझे हि साथ लेकर जाना होगा अपनी बहू स्मिता को शादी बाद भी कॉलेज जाने की अनुमती देणेवाली आधुनिक स्त्री है , तो द्सरी ओर इकलौती बेटी रीतू जिनका का पती अपनी प्रेमिका को घर लाना चाहता है ,रीतू भरापुरा घर परिवार छोडकर मायके आ जाती है, तब सब कुछ जानते हुये भी बारबार मिसेस गोयनका उसे वापस पती घर जाने के लिए कहती है, उसे सहने के लिए कहती है घर के विवाद से बचने के लिए बहूओंको हमेशा समझाती है ,और उनका पक्ष लेती है अपने बेटे रमेश पर तो रमा का हक मानती है रमेश के बेटे को प्रथम रमा की गोद में देती है रमा पती की प्रेमिका होकार भी वह उसके लिए चिंतित है ,उनके भविष के बारेमें चिंतित है रमा का चूप रहना उसे सहा नही जाता तो खुद ऑफिस में जाकर उसकी माँफ़ी माँगती है साफ दिल की होने के कारण ही रमा के घर के लिए योगदान को मान्य करती हुई कई बार रमा के कारण पती को डाटती है पती को हर समय एहसास दिलाती है की रमा भी तुम्हारी जिम्मेदारी है अपना परिवार ,पोते ,बेटे , बहुएँ आदि का एक दुसरे प्रती स्नेह देख प्रसन्न होती है, रमा की बात को अपनी बहुओंको मानने के

लिए कहती है । अतः प्रभा खेतान जी ने मिसेस गोयनका के माध्यमसे भारतीय समाज की सभी मर्यादाओंका पालन कारनेवाली आदर्श स्त्री के रूप मे चित्रित किया है ।

'रीतू' अपने अपने चेहरे की एक महत्वपूर्ण स्त्री पात्र है । मिसेस और मिस्टर गोयनका की एकलौती बेटी है । रीतू पर माँ से ज्यादा रमा का प्रभाव है । रीतू भी पुरुष प्रधान समाज तथा पितृसत्ताक व्यवस्था पिडीत स्त्री के रूप मे चित्रित हुई है। उनका पती कुणाल दूसरी स्त्री के प्यार में पडकर उसे घर में लाकर रखना चाहता है । कुणाल द्वारा बार बार रीतू को उनके पिता और रमा के संबंध का उदाहरण देकर अपमानित करता है । आधुनिक स्त्री होने के कारण अपनी माँ की सलाह न मनते हुये शादी को त्यागकर मायके चाली आती है । हमारे समाज में आज भी ससुराल छोडकर मायके आयी स्त्री को बोझ समझा जाता है । मायके में उनका कोई स्वागत नाही होता , भाई उनके झगडे में ज्यादा दिलचस्पी नाही दिखते ,भाभीयाँ भी ध्यान नाही देती ,उनका यहाँ आना किसी को अच्छा नाही लागता, पिताजी उनकी दुसरी शादी करना चाहते है पर रीतू मना कर देती है । हमारे समाज की कैसी विडंबना है कि, रीतू का बारह साल का लाडका भी अपनी माँ को ही समझोता करने के लिए कहता है । रीतू को घर में कहा रखे, इस बात पर विवाद हो जाता है । लेखिकाने मार्मिक ढंग से स्त्री कि समस्या की ओर प्रश्न उपस्थित किया है । रीतू के माध्यम से लेखिका कहती है कि, अब रीतू के सामने प्रश्न चिन्ह है कि उसका घर कौनसा है ? पती का, पिता का या दोनों भी नाही. हमारे समाज की यह बडी विडंबना है । स्त्री के अत्यंत गंभीर प्रश्नों की ओर प्रभा जी ने समाज का ध्यान आकर्षित करके अंतर्मुख होकार सोचने के लिए मजबुर किया है ।

'स्मिता' उपन्यास में विद्रोही पात्र के रूप में स्मिता चित्रण हुआ । स्मिता एक अलग स्वभाव की स्त्री है । मिसेस गोयकाकी छोटी बहू है । स्मिता स्वयं के विचारोंपर चालनेवली आधुनिक स्त्री है । स्मिता संस्कारी स्त्री तो है ,सब का आदर भी करती है पर जहाँ उन्हें गलत लागता है वही स्पष्ट रूप से बोल देती है , वह किसीसे दबकर नाही रहती । अपने ससुर और रमा के रिश्ते का खुलकर विरोध करती है । अपने सास के सह्नसील स्वभाव से चिढती भी है ,अपने सास के प्रती उसके मन में दया आती है । स्मिता समाज मान्यता न देनेवाले रिश्ते को नाही मानती । पढी लिखी है पर समाजसे डरती भी है । सास कि सहन करणे कि सलाह को अस्वीकार करती है । वह उसी रमेश की पत्नी है ,जिसे रमेश को रमा ने ही पढाया ,बडा किया , बिजनेस पार्टनर बनाया ,यहाँ तक की रमेश के बेटे को प्रथम रमा के हाथ में दिया गया था। ,ऐसा होते हुये भी रमा का विरोध करती है । सास के द्वारा कहने पर पर भी रमा कि दी हुई साडीयों को नाही स्वीकारती । मायके आयी ननंद रीतू को वह अपने पैरों पर खडी होकर संघर्ष के लिए तैयार होने की सलाह देती है । लेखिकाने बहुत सुंदर ढंग से समाज में आये परिवर्तन तथा अंतर को प्रेमा स्मिता और सास मिसेस गोयनका के माध्यमसे पीढीगत अंतर (जनरेशन गॅप) को दर्शाया है ।

'प्रेमा' आधुनिक स्त्री होकर भी प्रेमा परंपरा के अनुरूप चलनेवली और अपनी सास की बात को माननेवाली स्त्री के रूप में निरुपित हुई है गोयनका परिवार की बडी बहू है ससुर का सास को सरेआम अपमानित करना उसे अच्छा नाही लागता अत: हमेशा सहती आयी सास पर उन्हे दया आती है और इसी बात के कारण सास को सहारा भी देती है अपने ससुर और रमा के रिश्ते को लेकर नाराज तो होती है ,पर सब के सामने व्यक्त नाही करती ऐसा होते हुये भी वह हमेशा रमा के विचारों को मानकर चलती भी है प्रेमा चाहकर भी अपना विद्रोह व्यक्त नाही कर पाती उसे अंदर हि अंदर दाबा देती है 'मृदुला' उपन्यास में सहायक पात्र बनकर सामने आती है, मिसेस गोयनका की भतीजी है मृदुला आधुनिक युग की स्ट्रेट फॉरवर्ड विचारोंवाली है मुदुला हमेशा अपनी सहनेवाली चाची और हमेशा अपमान करनेवाले चाचा के स्वभाव का विरोध करती है पुरुष प्रधान व्यवस्था एवं समाज की इस अप प्रवृत्ति का विरोध करती है

प्रभा खेतान जी ने इन सभी स्त्री पात्रों के अतिरिक्त कुछ सहायक स्त्री पात्रों को भी चित्रित किया है उपन्यास में 'आरती' एक ऐसा हि स्त्री पात्र है रमा की सहेली है ,स्टेनो का काम करती थी ,अब वह रिटायर्ड होकर रमा की सेवा करती है कामकाजी स्त्री के रूप में सपना दाई को चित्रित किया गया है सपना भी हमारी समाज व्यवस्था से पिडीत स्त्री है बीस वर्ष की उम्र में हि विधवा हुई थी अपनी तनखा भाई और माँ के लिए भेज देती है सपना स्वाभिमानी स्त्री है अत: रीतू का उनके साथ व्यवहार देखकर गोयनका के घर का काम छोड ने की बात करती है इनके माध्यम से लेखिकाने कामकाजी स्त्री की सास्यओंको चित्रित किया है इनके साथ साथ जमुना, डॉ.माधुरी मुखर्जी जैसे अन्य पात्रों को निरुपित करके स्त्री की सामाजिक दशा का यथार्थ चित्रण किया गाया है

निष्कर्षत: 'अपने अपने चेहरे ' उपन्यास में प्रभा खेतान जी ने अन्य उपन्यासों की तरह इसमें भी स्त्री से संबधित विविध प्रश्नों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है विभिन्न स्त्री पात्रों के माध्यम से समाज का स्त्री के प्रती के दृष्टीकोण को अभिव्यक्त किया है स्त्री चाहे पढी लिखी हो ,अनपढ हो या स्वकर्तुत्व से अपने पैरों पर खडी हो पुरुष वर्ग या हमारा समाज आज भी उन्हें असहाय बना ही देता है आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी स्त्री को अपने अस्तित्व के लिए लडना पड रहा है मूलत: आज भी समाज यह जानकर भी सहेज रुप से मानने के लिए तैयार नाही है की, समाज का वास्तविक विकास स्त्री और पुरुष के समन्वय से ही साध्य है स्त्री को समानता एवं भेद रहित भावभूमि के निर्माण में स्त्री के साथ पुरुष का भी सहयोग अवश्यक है स्त्री और पुरुष दोनों के प्रती हमारा दृष्टीकोण समान होना, विकास के समान अवसर प्रदान करना हमारा सामजिक दायित्व है

संदर्भ –

1. अपने अपने चेहरे ' – प्रभा खेतान □

2. ' प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार ' – डॉ .उषा कीर्ती राणावत □

3. ' पीली आँधी' - प्रभा खेतान □

4. ' प्रभा खेतान के समग्र साहित्य का अनुशिलन '– डॉ .सुगंधा धारपनकर □

5. 'हिंदी साहित्य का इतिहास ' –डॉ .माधव सोनटक्के □

6. ' नालंदा ' - शब्द कोश □